# “भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध”

## दो दिवसीय कार्यशाला

## 25-26 जुलाई, 2024

**आयोजक**

**बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल**
**होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)-462026**

**बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल**

**होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)-462026**

# "भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध"

**दो दिवसीय कार्यशाला**

**25-26 जुलाई, 2024**

**<u>निमंत्रण और शोध पत्रों के लिए आह्वान</u>**

## प्रस्तावना

भारतीय समस्याओं के लिए भारतीय समाधान खोजने के उद्देश्य से, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय 25 - 26 जुलाई 2024 को "भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध" पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित करने जा रहा है। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विषय क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) पर शोध को संरक्षित और बढ़ावा देना, नवाचार को प्रोत्साहित करना, पारंपरिक भारतीय ज्ञान परंपरा की गहरी समझ विकसित करना, और समाज के कल्याण के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के उपयोग के साथ वर्तमान समस्याओं का समाधान खोजना है। हम सभी भारत के विभिन्न हिस्सों में बिखरे उत्कृष्ट वास्तुकला के चमत्कारों से परिचित हैं। अजंता एलोरा की मूर्तिकला की सुंदरता न केवल सौंदर्य में बल्कि तकनीक में भी दुनिया में अतुलनीय है। ऐसी सामान्य चीजों के प्रति कम सराहना होती है - जैसे कि कुम्हार के उत्पाद, झाड़ू, वस्त्र आदि जो हम हर दिन उपयोग करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की विधि क्या है जिसने यह सब संभव किया? कैसे ज्ञान क्षेत्रों को प्रणालीबद्ध किया गया जैसे कि शास्त्र? यह ज्ञात है कि प्रत्येक शास्त्र का व्यवहार में एक स्पष्ट उद्देश्य है और इन ज्ञान क्षेत्रों की निरंतरता के कई उदाहरण हमारे कुशल कारीगरों और शिल्पकारों की पारंपरिक प्रथाओं में देखे जा सकते हैं, जिनका काम प्राचीन ज्ञान प्रणाली और इसके अभ्यास पर आधारित है। जब हम आधुनिक तकनीक द्वारा उत्पन्न समस्याओं को देखते हैं, तो आश्चर्य होता है कि यह कहाँ समाप्त होगा। पर्यावरण संकट को देखें जो अकेले ही दुनिया को नष्ट कर सकता है, अन्य चीजों का क्या होगा। फिर भी, भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रामाणिक ज्ञान के साधनों के रूप में प्रमाणों, प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम के माध्यम से, सभी विषयों के प्रामाणिक ग्रंथों में चर्चा की गई है जो एक ऐसे पद्धतिगत आधार की ओर संकेत करता है जो अंततः केवल मानव समाज की ही नहीं बल्कि पूरे ब्रह्मांड की भलाई का समर्थन करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा को समझना और इसके साथ काम करना सभी के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने में मदद कर सकता है। इसलिए, इसके सिद्धांतों, विधियों और प्रथाओं को बेहतर ढंग से समझने की आवश्यकता है।

## बरकतउल्ला विश्वविद्यालय : परिचय

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, जिसे पहले भोपाल विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता था, की स्थापना 1970 में मध्य प्रदेश की राजधानी में की गई थी। 1988 में इसे भोपाल के महान स्वतंत्रता सेनानी प्रो. बरकतउल्ला की स्मृति में बरकतउल्ला विश्वविद्यालय का नाम दिया गया। विश्वविद्यालय का क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र आठ जिलों में फैला हुआ है: भोपाल, सीहोर, विदिशा, रायसेन, होशंगाबाद, हरदा, बैतूल और राजगढ़। इसका विस्तार केंद्र बैतूल और बियोरा में भी है।

विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के लगभग सभी क्षेत्रों को सम्मलित करता है, जिसमें संबद्ध कॉलेजों और 25 से अधिक विश्वविद्यालय शिक्षण विभागों में व्यापक पाठ्यक्रमों की शिक्षा दी जाती है। ये विभाग विभिन्न संकायों में फैले हुए हैं, जिनमें कला, विज्ञान, समाज विज्ञान, चिकित्सा, वाणिज्य, प्रबंधन, कानून, इंजीनियरिंग, शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और तकनीकी शिक्षा शामिल हैं। बरकतउल्ला विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण, व्यावसायिक और वैज्ञानिक शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। विश्वविद्यालय नवाचार, अंतरविषयक अध्ययन और वैश्विक मानकों को सुनिश्चित करता है ताकि युवाओं में ज्ञान का सृजन हो सके। एक ज्ञान केंद्र के रूप में, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान, रचनात्मकता और उद्यमिता में निरंतर नवाचार के माध्यम से समाज के परिवर्तन में योगदान दे रहा है, और छात्रों को राष्ट्रीय विकास के लिए अवसर प्रदान कर रहा है।

## कार्यशाला के उद्देश्य

1. नयी शिक्षा निति 2020 के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा अनुसंधान दर्शन, विधि और अभ्यास (UG, PG, डॉक्टरेट डिग्री के लिए) की समझ को बढ़ावा देना।
2. संबंधित विषयों में भारतीय ज्ञान परंपरा के उन क्षेत्रों की पहचान करना जहाँ शोध किया जा सकता है।
3. ज्ञान सृजन के लिए नए मंच, मार्ग और तालमेल बनाना।
4. भारतीय मानसिकता को उपनिवेशीकरण से मुक्त करना।
5. भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध पर पुस्तक लेखन: "भारतीय शोध परंपराएँ: दृष्टिकोण और विधि।"

## लक्षित प्रतिभागी:

प्रतिभागियों में शिक्षक, शोधकर्ता, केंद्रीय CBOS सदस्य, हिंदी ग्रंथ अकादमी के पुस्तक लेखक, ई-.कंटेंट डेवलपर, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ और विद्वान जो भारतीय ज्ञान परंपरा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, निम्नलिखित व्यापक संकाय (विषय समूह) से शामिल हैं:

1. कला;
2. शिक्षा और खेल;
3. वाणिज्य और प्रबंधन;
4. विधि;
5. जीवन विज्ञान;
6. भौतिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी;
7. सामाजिक विज्ञान;
8. व्यावसायिक पाठ्यक्रम;

उपरोक्त लक्षित प्रतिभागियों से कार्यशाला के विषय और उद्देश्यों पर विचार करने हेतु सारांश (लगभग 250 शब्द) और शोध पत्र (2500 से 4000 शब्द) हिंदी में आमंत्रित किये जाते हैं। इन्हें 15 जुलाई 2024 से पहले rgdastidarbu@gmail.com पर भेजा जा सकता है। शोध पत्र का प्रारूप अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्र के अनुसार होना चाहिए।

चयनित पत्रों को "भारतीय शोध परंपराएँ: दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली" नामक पुस्तक में प्रकाशित किया जा सकता है। शोध पत्र में संबंधित विषय क्षेत्र के छात्रों के लिए संदर्भ सामग्री की सूची शामिल होनी चाहिए। लेखकों से अनुरोध है कि वे 4 अगस्त तक अपने शोध पत्र को अंतिम रूप दें और उच्च शिक्षा द्वारा दिए गए आवश्यक प्रारूप का पालन करें। स्क्रीनिंग समिति का निर्णय अंतिम और बाध्यकारी होगा। पुस्तक का प्रकाशन हिंदी ग्रंथ अकादमी, मध्य प्रदेश द्वारा किया जाएगा।

अपेक्षित परिणाम

1. छात्रों को UG, PG और Ph.D. स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा (संकल्पनाएँ और सैद्धांतिक प्रारूप) की बुनियादी समझ से परिचित कराने के लिए तंत्र विकसित करना।
2. शैक्षणिक कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करने के लिए तंत्र विकसित करना।
3. ज्ञान सृजन के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा पर शोध को प्रोत्साहित करने के लिए तंत्र विकसित करना।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध के परिणामों को भारतीय समाज के लिए प्रासंगिक बनाने के तरीकों की पहचान करना।
5. भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध के क्षेत्रों की पहचान करना ताकि शैक्षणिक रूप से इसकी समझ को गहरा किया जा सके।
6. "भारतीय शोध परंपराएँ: दृष्टिकोण और विधि" पर पुस्तक।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

15 जुलाई, 2024: सारांश और पूर्ण शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि

20 जुलाई, 2024: स्वीकृति सूचना

**संरक्षक**
प्रो. एस.के. जैन
माननीय कुलगुरु, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

**संयोजक**
डॉ. आई.के. मंसूरी
कुलसचिव, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

**आयोजन समितियाँ**

**1. नोडल संगठन समिति:**

प्रो. आर. जी. दस्तिदार - 9424418440

प्रो. पवन मिश्रा - 9893069009

डॉ. सुनील स्नेही - 9839933686

डॉ. कपिल सोनी – 9839933686

डॉ. राहुल सिंह परिहार - 9425185505

**2. शोध पत्र स्क्रीनिंग, संपादन और प्रकाशन समिति**

पहले तीन सदस्य, CBOS के अध्यक्ष एवं एक सदस्य, अपने-अपने विषयों के लिए एक समिति बनाएंगे।

डॉ. रुपाली शेवलकर - 9753682937

डॉ. कपिल सोनी - 9839933686

डॉ. जया फूकन - 9826751736

बोटनी - डॉ. सुमन त्रिवेदी - 9424417914

अंग्रेजी साहित्य - डॉ. अभा पांडेय - 94225312221

हिंदी - डॉ. पुष्पा दुबे - 9406877078

अर्थशास्त्र - डॉ. इशरत खान - 9826739350

गणित - डॉ. अनिल राजपूत - 9425013306

संगीत - डॉ. रवि पांडोले - 9406511853

भौतिकी - प्रो. साधना सिंह - 9425030113

संस्कृत - डॉ. आचेलाल - 7974614732

समाजशास्त्र - प्रो. ममता वाजपेयी - 9425144716

वाणिज्य - प्रो. पवन मिश्रा - 9893069009

इतिहास - प्रो. ज्योत्सना अग्रवाल - 9926550513

जीवविज्ञान - डॉ. यू. एस. परमार - 8319312075

रसायन विज्ञान - प्रो. ओ. एन. चौबे - 9425124065

होम साइंस - डॉ. सुचिता तिवारी - 7000190078

मनोविज्ञान - डॉ. संतोष कुमार गुप्ता - 9407252780

राजनीति विज्ञान - डॉ. जे. सी. सिन्हा - 9425333048

दर्शन - डॉ. विजयलक्ष्मी - 7987213281

भूगोल - डॉ. कुसुम माथुर - 9425155330

**3. रिपोर्टिंग और पब्लिसिटी समिति**

प्रो. पवन मिश्रा - 9893069009

प्रो. ए. के. सक्सेना - 9826329683

प्रो. एस. एस. ठाकुर - 9406517946

डॉ. जया फूकन – 9826751736

**4. पंजीकरण, सुविधा और वितरण समिति ;टीए / डीए / सम्मान / प्रमाणपत्र ।**

डॉ. सुनील स्नेही - 9839933686

श्री नीतिश डेनियल - 7987244074

डॉ. मधु सरवान – 9424973315

डॉ. राहुल सिंह परिहार - 9425185505

5. **ई.कंटेंट डेवलपर्स समिति**

CBOS के अध्यक्ष एवं तीन सदस्य, अपने-अपने विषयों के लिए एक समिति बनाएंगे।

प्रो. अंशुजा तिवारी - 9424395704

डॉ. रेखा खंडिया - 9977114438

डॉ. तरुणा जैन - 9425010803

**जानकारी हेतु संपर्क (ईमेल)**

प्रो. आर. जी. दस्तिदार

rgdastidarbu@gmail.com